* श्रीविदेहजायैनमः *

अनन्त श्रीविभूषित महाराज श्रीविदेहजाशरण जू कृत

होलिका-रस-बिनोद

पदावली



प्रकाशिका—

श्रीमती महेन्द्रवतीदेवी उपनाम
श्रीजानकी सहचरी
निवासस्थान बड़ीबाग-गया।

प्रथमावृती ५००)

❋ श्रीविदेहजायैनमः ❋



पूजनीय महानुभाव !

अतएव पाठक वृन्द प्रस्तुत पुस्तक में काव्य का अलंकार प्रकार अन्वेषण न करके केवल श्रीयुगलकिशोर जू का परम एकान्तिक क्रीड़ा जो कि गुरुदेव जू के वाणी के द्वारा प्रगट हुआ संग्रह की गई है। यह केवल रसिक जन एवं उनके अनुयाई वर्गों का ही उपभोग अतएव ध्येय गेय पदार्थ है अनोचित दृष्टाओं से क्षमा प्रार्थी—

संसोधक—	विनीत—
श्रीमहावीरदासजी संगीतरत्न	रामप्यारी शरण

❀ श्रीविदेहजायै नमः ❀



सोरठा—वन्दौं गुरु परमेश, जिनकी महिमा को कहै ।
थके गणेश महेश, शारद शेष रमेश युत ॥

❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

❀ अथ ❀

❀ होलिका रस विनोद पदावली ❀

❀ प्रारम्भ ❀

❀ पद १ ❀

सषि आयो बसन्त सुखेलु फाग ।

अनुराग उमग उर मदन जाग ॥

सिय बाग सोहाग आलिन मनाय ।

सब गावति साज मिलाय राग ॥

रँग रारि मची भलि सेन साजि ।

मिलि द्वन्द करैं कहि धन्य भाग ॥

किये पीत सिंगार सु दम्पति हैं ।

सिर लसत चन्द्रिका नवल पाग ॥

श्री प्रेमलता रितुराज पूजि ।

हिय मंजु मनोरथ बढन लाग ॥

❀ पद २ ❀

अलि खेलैं बसन्त सु भरि उमँग ।

पिय प्यारी के संग नवल रंग ॥

किये पीत सिंगार सु ओर दुहूँ ।
हिय उमगि बढ़ावैं मदन जंग ॥
रस गान करैं नवरंग भरी ।
धुनि छाय रही बाजैं मृदंग ॥
दुहुं ओर खड़े बरजोर करैं ।
जय हेतु लपटि गये परसि अंग ॥
दोउ अंग सुरंगन भीजि गये ।
छबि हरित रंग इक भइ अभंग ॥
अलि सेज किये रचि समर भूमि ।
दोउ संग बिराजें सजि अनंग ॥
श्री प्रेमलता अलि जीत चाह ।
सिय विजय निहारत श्याम दंग ॥

❀ पद ३ ❀

रितुराज आज सखि आयो ।
हिय भाव सरस सुष छायो ॥
चौंक बसन्त बसन्ती रंग मय साज नवल सजवायो ।
फरस वितान खँभ मेहराफैं बन्दन माल झुलायो ॥ १ ॥
कुन्डी झाड़ लट्टू बहु डालैं मणिमय दीप बरायो ।
चहुँ ओर फुलगमले साजे इतर गुलाब सिचायो ॥ २ ॥
मध्य सिंहासन पर दोउ राजत बहुरति काम लजायो ।

सेवा सौंज सजे बहु बाला गावति साज वजायो ॥ ३ ॥
अबिर गुलाल परस्पर लै लै खेल वसंत रचायो ।
श्रीप्रेममोद रस राज विभव यह रसिकन हिय दरसायो ॥४॥

❀ पद ४ ❀

रँगीले सिय संग खेलैं बसंत ॥
कनक महल के मध्य मनोहर रसमय देस एकंत ।
लोभि रहेउ रितुराज जहाँ नित मधुकर रव सुकरंत ॥ १ ॥
नवल सिंगार किये पिय प्यारी पीत सुकुंज लसंत ।
दुहुं दिसि सौंज सजे अलि वैवय सोहैं यूथ अनन्त ॥ २ ॥
बाजत साज गान करि नटहीं जय जय सब्द भनन्त ।
श्रीप्रेममोद भरि छवि अवलोकहिं भाविक जन रसवंत । ३॥

❀ पद ५ ❀

माघ पंचमी मदन जयन्ती रितुपति खेल सजाई ।
कनकभवन मनिकुञ्ज मनोहर नवल वितानतनाई ॥ १ ॥
ध्वज पताक रंभावलि तोरण झालरि ललित लगाई ।
केशरि कुमकुम अतर अरगजा कलश दीप धरवाई ॥ २ ॥
दधि दुर्वा फल फूल जवाँकुर अम्ब बौर दरसाई ।
सिय पिय अलिनि सहित रस भींजे खेलत फाग सोहाई ॥
बीण मृदंग मधुर धुनि बाजत गान तान रह छाई ।
नृतत नवल नटी पट फरकत भाव सुकलन देखाई ॥ ४ ॥

बर्षत सुमनदेव ब्रह्मादिक चढ़ि सुबिमाननि आई।
श्री प्रेम मोद यह छबि अवलोकत सहज स्वरूप समाई ॥५॥

❀ पद ६ ❀

आज जयन्ती मदन वीर को सषि रितुराज सुहायो।
श्रीरसराज भवन पिय प्यारी उत्सव साजु सजायो ॥
कनक कलश दधि दूव जवाँकुर फल सुफूल मन भायो।
तुलसी दल श्री केशरि चन्दन अतर सुगन्ध सिचायो ॥
चौकें दीप माल बन्दन नव अम्ब बउर छबि छायो।
अबिर गुलाल सुमन रज कुम कुम पिचकन रंग भरायो ॥
पीत सिंगार अलिन युत दम्पति भूषण भव्य नव्य सरसायो
रागिनी राग नटनि वहु बिधि सो तालन साज बजायो।
श्रीप्रेम मोद रस केलि उमगउर अपने भाग मनायो ॥४॥

❀ पद ७ ❀

होरी खेलन आई सिया स्वामिनि।
नवल सिंगार किये नख शिष लो।
प्राण नाथ को अभिरामिनि ॥
संग अली गण गावत आवैं।
कोकिल बैनी गज़ गामिनि ॥ २ ॥
मृग लोचनि सब सुभग सयानी।
लषि दुति लाजहिं वहु दामिनि ॥३॥

श्रीप्रेमलता तत सुष रसमाती ।
जात न जानहिं निसि जामिनि ॥४॥

❀ पद ८ ❀

आजु सिय होरी खेलन आवैं ॥
करि सिंगार महल से निकसीं ।
सखिन मध्य छवि छावैं ॥ १ ॥
बरनि न जाय अलौकिक सोभा ।
प्रीतम के मन भावै ॥ २ ॥
बाजत साज गान अलि करहीं ।
भूषण धुनि सरसावैं ॥ ३ ॥
फाग चौंक मे आइ बिराजीं ।
नयनन सयन चलावैं ॥ ४ ॥
श्रीप्रेमलता स्वामिनि की ओरी ।
विजय निसान बजावैं ॥ ५ ॥

❀ पद ९ ❀

सिया जू खेलने आई पिया सो आज रंग होरी ।
सजे नव सप्त अरु द्वादस भरी अति चाह हिय सोरी ॥
अली गण संग वहु सोहैं लिये चहुँ ओर रंग घोरी ।
लाल के ओर हसि हेरैं सयन सो लेहि चितचोरी ॥
बजैं वर बाजने गावैं रंगीली प्रेम सो गोरी ॥ २ ॥

❁ पद १० ❁

पिय लसत कपोल गुलाल लाल ॥
बीर सिंगार परस्पर दोऊ ।
हरषि मिलत मनो चतुर चाल ॥१॥
फूलि रहेउ नव सोन कंज ।
अकि मनसिज रूपी सुभग ताल ॥२।
भौंहैं भँवर मीन तहां कुण्डल ।
श्रवन सीप सम अति रसाल । ३॥
अलकैं लटक रही मुख ऊपर ।
पियत सुधा ससि फनिक बाल ॥४॥
नासामणि की हलनि अधर पर ।
मन्द हांस मानो पास जाल ॥५॥
श्रीप्रेममोद कैसे कोउ बचिहैं ।
घायल चितु छवि परत ख्याल । ६॥

❁ पद ११ ❁

खेलत आज रसिक दोउ होरी ॥
सरयू तीर बसन्त चौक में नवल बितान तनोरी ।
सिंहासन दुहुं ओर मनोहर नीचे फरस बिछोरी ॥
सौज सब साजि धरोरी ॥ १ ॥
बन प्रमोद फूल्यो चहुं ओरी भँवर गूंज सरसोरी ।

चातक कोकिल कीर चकोरैं कूजत मोर नटोरी ॥
निरषि हिय मदन बढ़ोरी ॥ २ ॥
जनकलली रघुलाल नवल वय संग लिये बहु गोरी ।
बाजत साज राग धुनि छाई फूलन मार परोरी ॥
लपटि मुख रंग मलोरी ॥ ३ ॥
श्रीप्रेम मोद रस केलि फाग मे लषि दृग हीय भरोरी ।
ततसुष स्वाद अनूप कहै को सहज स्वरूप लषोरी ॥
और सबसो मुष मोरा ॥ ४ ॥

❀ पद १२ ❀

रंग डारो न रसिया बर जोरी ॥
अति सुन्दरि सुकुमारि नवलवय ।
भोरी जनक किशोरी ॥ १ ॥
करि विनती सखियाँ लै आई ।
तुम्हसों खेलन होरी ॥ २ ॥
सारी झीन रंगीन स्यामलो ।
तड़ित ओप अंग छोरी ॥ ३ ॥
चन्द मन्द परिजात वदन लषि ।
अनुपम छवि रस बोरी ॥ ४ ॥
बड़े भाग अस दुलहिन पायो ।
लीजै रसहिं निहोरी ॥ ५ ॥
श्रीप्रेममोद पिय निज कपोल पर मलन देउ सिय रोरी । ६ ॥

❁ पद १३ ❁

मंडप तर आजु मचीं होरी ।
उत अवधेश इतै मिथलापति उमगत आनन्द हिय सोरी ।१।
उत बरिआती इत सरियाती अबिर गुलाल भरैं झोरी । २ ।
कुंअरि कुंअर चहुँ हिलि मिलि खेलत श्यामल गोर बनी जोरी
कूम कुम फूल मारि पिचकारिनि रंग को सरित बहायोरी ।४।
खंभन मे प्रति बिम्ब सुपरहीं अनुपम छबि बरनै कोरी । ५ ।
बाजन गान महा धुनि छाई प्रेम मोद सुख लूटोरी ॥ ६ ॥

❁ पद १४ ❁

मैतो जैहों न आलि खेलन होरी ॥
सरजू तीर अवध की गलियन, रंग वर्षत चहुँ ओरी ॥ १ ॥
नृप सुत अनुज सखा संग लीन्हे, विदुषक भाँड करोरी । २ ॥
कर कमलनि पिचकालिये रँग भरि अविर गुलाल भरे झोरी
नवल किशोर मार मद माते लाज मर्यादा छोरी ॥ ४ ॥
फागुन के मिस घात तकत नित खोजत नवल किशोरी ।५।
पुरुषन को पुरुषत्व रहत नहि लंपट रस में बोरी ॥ ६ ॥
पति वर्तन को धर्म बचत नहि निरषिहोही छबि भोरी ॥७।
श्रीप्रेम मोद एक मास रहौं घर निकसौंगी नहि पौरी ॥ ८ ॥

❀ पद १५ ❀

सिय प्रीतम आलि नई होरी ॥
जब देखो तब रंग बरसावत ।
सरजू तीर अवध षोरी ॥ १ ॥
नर नारी चर अचर बिमोहत ।
निरषत स्याम गौर जोरी ॥ २ ॥
कोटिन सखा सखी दुहुँ ओरी ।
गान नृत्य बरनै को री ॥ ३ ॥
द्वादस मास छवो रितु निसि दिन ।
श्रीप्रेम मोद उमगोरी ॥ ४ ॥

❀ पद १६ ❀

सिय स्वामिनि मानसु ठानी ।
पिय पिचका मारेउ तानी ॥
तन नवल सु अति सुकुमारी
रस माते हिय न विचारी ॥
छिपि सघन कुंज मधि जाई ।
तहँ कोऊ जान न पाई ॥
रस रंग भंग भयो भारी ।
अलि कहहु उपाय बिचारी ॥

चलो आपु लाल ललि पासा।
परि चरन कहहु हम दासा ॥
अब चूक माफ सब कीजै।
जो उचित दन्ड सो दीजै ॥
सुनि बचन स्याम मन भाये।
सिय पास चले चित चाये ॥
मिलि प्रेम मोद उमगाये।
रस जंग सु फाग मचाये ॥

❋ पद १७ ❋

पिय गाल गुलाल मसलि दैहौं ॥
सजग होहु प्रीतम रघुनन्दन, तुमहिं जीति फगुवा लैहौं।
नारि बनाय नचैहौं सब मिलि, ताल बजाय राग गैहौं ॥
सावन को वदलो लै फागुन, सिय स्वामिनि ढिग लै जैहौं।
पाँय पराय भिजाय राज रस, श्रीप्रेममोद अति सुष पैहौं ॥

❋ पद १८ ❋

रंग होरी में छयला पकरि गये ॥
कोटिन नारि चहूँ दिसि घेरे।
कलवल वरबस हारि गये। १ ॥
नवसत द्वादस साजि ललन अङ्ग।
बहु बिधि निरतन गान ठये ॥२॥

मन भावत फगुआ लै अलिगण ।
सीय की जीत मनाय लये ॥ ३ ॥
हाहा खवाय भिजाय सुरंगन ।
बदन चूमि रस रंग छये ॥ ४ ॥
श्रीप्रेममोद फागुन सुख लूटत ।
गावत अनुपम राग नये ॥ ५ ॥

❀ पद १६ ❀

चलो खेलैं वसन्त वसन्त कूंज ।
कोमल धुनि हारिनि भँवर गूंज ॥
नवल फाग खेलैं सिय प्रीतम ।
रति मन्मथ मानो अलिन पूँज ॥
मंगल भेट सीय रघुवर को ।
अलि प्रेमलता मन निरषि लूँज ॥

❀ पद २० ❀

नवल सखि खेलैं फाग सजाई ॥
माघ वसंत पंचमी मंजुल गावहिं राग सुहाई ॥ १ ॥
केशरि रंग परस्पर छिरकै, पिय प्यारी मनभाई ॥ २ ॥
अति अनुराग भरे मन दम्पति देह दसा विसराई ॥ ३ ॥
श्रीप्रेमलता यहि छवि के ऊपर तन मन धन नेवछाई ॥४॥

❀ पद २१ ❀

सखि आयो रितु सु बसंत आज ।
हिय उमगि उठेउ रसराज साज ॥
पिय मिलन हेतु अनुराग जाग ।
सब बिसरि गयो तन लाज काज ॥
अलि रंगमहल को चलत भईं ।
सजि मंगल गावति साज बाज ॥
लषि प्रेमलता छबि भई सनाथ ।
करि भेंट जुहारति अलि समाज ॥

❀ पद २२ ❀

सखि देखो बसंत रसाल कुञ्ज ।
दोउ राजत प्रीतम प्यारि संग ॥
छबि छाय रही चहुँ ओर पूँज ।
लषि लाजत कोटिन रति अनंग ॥
पिक बोल मनोहर भँवर गूँज ।
बन उपबन फूले नव उमंग ॥
अलि नर्तहिं गान करि सरस मंजु ।
धुनि छाय रही बाजहिं मृदंग ॥
लषि प्रेमलता सियकर सुकंज ।
गहि लगे उड़ावन पिय सुरंग ॥

❀ पद २३ ❀

रंग होरी में प्रीतम प्यारो बने ॥
सजि नव सप्त सिंगार मनोहर ।
द्वादस भूषण अंग ठने ॥ १ ॥
सारी चटक रंगीन सोहावनि ।
अंगिया के बन्द नाहिं तने ॥२॥
बेशरि हलनि मन्द मुसुकावनि ।
तिरछी चितवनि हरति मने ॥३॥
झमकि झूमि झुकि चलनि सोहावनि ।
मन्मथ गज लषि लाज घने ॥४॥
श्रीप्रेमलता छवि निरषहिं आली ।
हरषित विजय निसान हने ॥५॥

❀ पद २४ ❀

रंग होरी में छयला पकरि गये ॥
घेरि अली गण रंग लगावहिं, श्याम अंग अति रंग छये ।
गाल गुलाल मसलि मुष चूमैं, मन भावत आनन्द भये ।
अलि कहैं लाल कहौ हम हारे, प्यारी के गुण गावो नये ।
हाहा खवाय नाचि गुण गाये, श्रीप्रेमलता तव छोरि दये ॥

❀ पद २५ ❀

होरी मे आजु पिया को पकरि लै आई ॥
चहुँ दिसि घेरि खड़ी सब अलि गण मध्य किये रघुराई।
कहैं लाल अब हारि बोलिये सिय की जीत मनाई ॥
चूक सब माफ कराई ॥ १ ॥
नवल सिंगार किये रघुवर को तिय को वेष बनाई ।
ताल बजाइ नचावैं गावैं करैं सवैं मन भाई ॥
कहौं का आनन्द गाई ॥ २ ॥
सोइ कियो तब रसिक लाड़िले जो सबके मन भाई ।
पद परसत सिय कंठ लगायो लीन्ही सँग वैठाई ॥
वेष यक प्रेम समाई ॥ ३ ॥

❀ पद २६ ❀

होरी खेलैं रसिक दोउ आज अलिनि संग हरिषि हिया ॥
कनकभवन मधि रास मण्डल में ।
सन्मुख सोभित सीय पीया ॥ १ ॥
सिय दिसि सखी सखा पिय ओरी ।
जनु रति पति बहु रूप किया । २॥
बाजत बीणा मृदंग मँजीरा ।
गान करत बहु नवल तिया ॥३॥

फूल मारि पुनि रंग उड़ावति ।

सोधि विभाग लिये छड़िया ॥४॥

श्रीप्रेमलता छवि लखैं रसिक जिन्ह ।

श्रीअग्र स्वामि अवलम्ब लिया ॥५॥

❀ पद २७ ❀

रास मण्डल में आजु रसिक दोउ फाग मचाई ॥
रघुनन्दन श्री जनक नन्दिनी संग सखी समुदाई ।
नवल सिंगार किये नष शिषलौं वय किशोर बनि आई ॥
दुहूँ दिसि गोल बनाई ॥ १ ॥
पिय दिसि सखी सखावनि सोहैं सिय दिसि सखी सोहाई ।
बाजत बीणा मृदंग झांझ डफ नृतत भाव देखाई ॥
गान की धुनि नभ छाई ॥ २ ॥
चन्दन चूर कपूर कुमकुमा अवरख फूल चलाई ।
होली कहि भरि लेहि परस्पर अँग न रंग लगाई ॥
हसैं सब ताल बजाई ॥ ३ ॥
मदन मनोरथ दुहुं दिसि उमगे लाज मर्याद भगाई ।
अमित रूप धरि रास बिहारी पिचकन रंग बरषाई ॥
मरम यह काहुं न पाई ॥ ४ ॥

श्रीप्रेमलता यह फाग अनोखी निगम अगम कहि गाई।
सतगुरु कृपा होइ तब पावै महल वसै सो जाई॥
रास रस सिंधु समाई॥ ५॥

❀ पद २८ ❀

अब जावो न प्रीतम आजु, कालि रंग डारि दई॥
छल कीन्हो पिय श्याम शलोने।
सिय स्वामिनि सो जानि लई॥
चलि प्यारी पद सीस नवावो।
छमा होइ जो चूक भई॥
कल बल छल एको नहि चलि हैं।
अबहिं बनावों नारि नई॥
अस कहि चन्द्रकला रघुवर को।
लै प्यारी के पास गई॥
चरण परे पिय कंठ लगायो।
श्रीप्रेमलता मन मोद छई॥

❀ पद २९ ❀

रंग डारो मोपै रघुराज लला॥
हौं मुग्धा सुकुमारि लाड़िले नहि जानौं कछु खेल कला॥१॥

औरनि के संग रारि मचावो ।
जिन तत्र गाल गुलाल मला ॥ २ ॥
सिय प्यारी को हौं लघु भगनी,
अनय किये से नाहि भला ॥ ३ ॥
श्रीप्रेमलता की सुनि पिय बतियाँ ।
सकुचि हँसे नहि जोर चला ॥ ४ ॥

❀ पद ३० ❀

नई दुलही होरी खेलन आई ॥
लषि पिय के मन मोद वढेउ अति ।
नयनन सयन चलाई ॥
लाज भरी घुंघुट नहीं खोलत ।
रस बस हिय उमगाई ॥१॥
प्रथम समागम भयेउ दुहुँन को ।
रस मय फाग मचाई ॥
श्रीप्रेमलता लषि फाग अनूपम ।
बहुरति काम लजाई ॥२॥

❀ पद ३१ ❀

सजन संग खेलिये फाग सहेली ॥
लैकर रंग लगाय कपोलन, अरस परस भुजमेली ॥१॥
बाजत वीण मृदंग झांझ डफ, गावति राग नवेली ॥२॥

सुनि सषि वचन प्रिया मन भाये, दरसाई रसकेली ॥३॥
श्रीप्रेमलता प्यारी बस प्रीतम, बरसाई रंग रेली ॥४॥

❀ पद ३२ ❀

मारी गुइयाँ सुरंग पिचकारी ॥
अवध छयल बरजो नहि मानै, भेइ दई रस गारी ॥१॥
मैं उनसे कछु बोली नाहीं, हँसि चितवन मो पै डारी ॥२॥
घूँघट खोलि गुलाल लगायो, करि मोसो बलभारी ॥३॥
रससानी नवला की वाणी, सुनि विहँसी अलि सारी ॥४॥
श्रीप्रेमलतहिं करि अभय सियाजू, बरजेउ अवध बिहारी ॥५॥

❀ पद ३३ ❀

नवल सैयाँ चलो फाग खेलाऊँ ॥
प्यारी को प्रीतम करि रसिया, तुमको नारि बनाऊँ ॥१॥
डरहु नहीं फागुन में प्यारे, सिय जू से अभय कराऊँ ॥२॥
नाचहु गाय प्रिया गुण सुन्दर, सब सषि साज बजाऊँ ॥३॥
श्रीप्रेमलता प्यारी बस प्रीतम, अलि सैं मौज देवाऊँ ॥४॥

❀ पद ३४ ❀

अवधपुरी रघुबीर आज रंग होरी मचाई ॥
भरत लषन रिपुदवन सखन संग रघुबंसी समुदाई ।
केशरि नीर भरे पिचकारिन रंग बरसा बरसाई ॥
गलिन में धार बहाई ॥ १ ॥

बीण मृदंग ढोल डफ झालर संख भेरि सहनाई ।
बाजत साज राग धुनि छाई बंसी बेणु मिलाई ॥
रहेउ अति आनन्द छाई ॥ २ ॥

नगर बजार चौंक प्रति कुञ्जनि घूमत स्वांग बनाई ।
महल महल में जाइ सबनि के गावत गारि सुहाई ॥
लाज को दूरि भगाई ॥ ३ ॥

श्रीप्रेमलता सिय सहित महल ते निरषत अति सुष पाई ।
खेलि नहाइ दान बहु दीन्हो सरयूतट रघुराई ॥
सुमन झरि देवन लाई ॥ ४ ॥

❀ पद ३५ ❀

दोउ खेलैं वसंत सिय स्याम संग ॥
राजत रतन सिंहासन दम्पति ।
नव वसन विभूषण सजि सु अंग ॥

छत्र चँवर वर व्यजन सु लीन्हे ।
संग भरत लषण रिपुकरण भंग ॥

सखा सुकंठ विभीषण आदिक ।
लिये धनुष ढाल अरु असि निषंग ॥

नटत सुसंकर नारद हनुमत ।
करि गान सुरागिनि नव सुधंग ॥

ब्रह्मा वसिष्ठ परासर बजवत ।
सजि नवल पखाउज वीण मुर्चंग ॥
ब्यास सुसुक आचार्य पुरुषोतम ।
लिये पान अतर अरु केशरि रंग ॥
गंगाधर आचार्य सदा श्री ।
लिये छड़ी गेन्द दुहुँ दिसि उमंग ।
रामेश्वर श्री द्वारा नन्दा ।
लिये माल सुभग जुगमन उरभंग ॥
देवानन्द श्री स्यामानन्दा ।
लिये चन्दमुखी नवकल पतंग ॥
श्रुतानन्द श्री चिदानन्दजी ।
लिये मेवा फल बहु भरि उछंग ॥
श्रीपूरण आनन्द श्रियानन्द लिये ।
वसन विभूषण दोउ अलंग ॥
हरियानन्द श्रीराघवानन्दा ।
लिये ध्वजा लषै युग रंग जंग ॥
श्रीरामानन्द मंत्र वंसावलि ।
अति सुषद नसावनि जगत दंग ॥
श्रीप्रेमलता यह फाग वसन्ती ।
बहु वारि विलोकति रति अनंग ॥

❀ पद ३६ ❀

रंग होरी खेलैं श्रीरामानन्द ॥
बैठे सुभग सिंघासन सोहैं ।
चहुँ ओर विराजत संत वृन्द ॥
छत्र अनन्ता नन्द फिरावैं ।
जेहि देखत उडुगण लजत चन्द ॥
सुखानन्द श्रीसुर सुरानन्दा ।
करै चँवर दूहूँ दिसि मन्द मन्द ॥
हरियानन्द श्री पीपा दोऊ ।
लिये अतर पान सेवहि प्रसन्द ॥
श्रीकबीर श्रीभावानन्द ।
लिये साज बजावैं सुरस कन्द ॥
श्रीसैना श्रीधना सु तिन्ह संग ।
लिये साज येउ चहुँ बिधी के बन्द ॥
श्रीरैदास गालवानन्द लिये ।
रंग उड़ावैं सुषद द्वन्द ॥
पद्मावती संग वहु आली ।
करैं गान प्रेम युत विविध छन्द ॥



❀ श्रीजानकीवल्लभो विजयते ❀

❀ परिशिष्ट भाग में प्रबन्ध ❀

❀ कबित्त ❀

नवल प्रमोदबन कनकभवन विच फूलो हैं वसन्त अति सोभा सरसातु हैं। कनकभवन वायु कोन हीं में फागु कुंज अलिन समेत सिय पिय तहं जातु हैं॥ होरी को उछाह करैं नवल सुरँग भरि द्वंद को मचावैं हरैं काम पीर गातु हैं। प्रेम सो बखानि कहौं सुनो मन लाय सखी रंग को पसार मेरे हिये न समातु हैं॥ १॥

❀ चौपाई ❀

नवल वसंती कुंज अनूपा। चहुं दिशि बृक्ष लता रस रूपा
तेहिचारोदिशिकोटसोहावन। नवरंग मनि चित्राम सुअनगन
उच्चविसाल मनोहर राजैं। सिंघ पौरि चहुं अलिन समाजैं
ताके मध्य विसाल वेदिका। हाटक मनिमय चित्र रेषिका
तेहि वेदी पर कुंज अपारी। रमन चमन चहुं ओर संवारी
भँवर चकोर कोकिलाआदिक। रसफलखाय सराहैं स्वादिक
गुंजैं कूजैं रस मय वानी। लता बृक्ष लपटी रस दानी
अतर गुलाब फुहारे चलहीं। त्रिविधि पवन सौरभ लै हलहीं

❀ सोरठा ❀

रितु बसंत सरसाय, भूमिलता द्रुम कुञ्ज खग ।
कुण्ड तड़ाग बनाय, मनि सोपान सुहाहि मग ॥
प्रेमलतहि दरसाय, कृपा लड़ैती लाल की ।
होरी साज सोहाय, केसरि रंगहि सान की ।२॥

❀ चौपाई ❀

यहिविधिचारोदिसिलखि लीजे । वेदी जाय नवल सुख कीजे
ललित विसाल चाँदनी तानी । मुक्ता वंदन वार सुहानी
फरस बिचित्र बिछाई नीचे । बिबिध सुगंधन सो समसीचे
खंभ दंभ हर चहुँ दिशि नीके । मेंहराफैं भावैं अति जीके
तातर युगल सिंहासन मनिको । सहस कमल दलचतुरखंडको
एक पूरब एक पच्छिम सोहै । सोभा हेतु विलग किये सोहै
पीत रंग के बिछे गलैचे । सुमनन की रचना बिचबीचे
दुहुँ दिशि कवच भरे ता ऊपर । पीत रंग तकिया अतिसुन्दर
तेहि ऊपर ललि लाल बिराजैं । कोटिनरतिमनमथलखिलाजैं
पीत सिंगार किये दोउ प्यारे । निरखत मनमें मोद अपारे

❀ दोहा ❀

नवल लड़ैतो लाल छबि निरखत मन न समाय ।
प्रेमलता कैसे कहै कृपा बिवस कछु गाय ॥

❀ कवित्त ❀

सुभग लड़ैती जू के चरण कमल बीच जावक की छबि मोह सोभा सो अपार है। नूपुर ललित धुनि होत है रसाल मानो लाल मन मोहन को हंस कलमार हैं॥ पीतरँग सारी तामें हरित किनारी बूटी लाल स्याम नैन मीन फांसवे को जार है। कटि किंकिनी ललित अति कंचुकी सोहाई वाहु में भूषन नव गले सोहैं हार हैं॥१॥ नाशामनि नथ द्दग अंजन नवल छबि तिलक सु भाल फूल झुमका सुधार हैं। सीस फूल चन्द्रिका की जोति सुठि मोतिनि सो मांग चोटी रचि पिय रूपहि को सार है॥ रँग को तरंग अति चित्र उठै छन छन सोभा सु अनूप कहि पावै को अपार है। सिया जू की छबि देखि पिय की बखानो प्रेम बढ़त उमंग हिये रह्यो न संभार है।।२॥

❀ कवित्त ❀

प्रीतम के सिर पीत पाग तामे मोतिन के झब्बे हीरा कलँगी नवल रँग लाल हैं। अलक कपोल छुटी अतर सो बोरी कारी कुण्डल नवल कल तिलक सुभाल हैं॥ पीत रंग चदरा नवल कांधे मोतिन के जाल दुहुँ छोर कटि धोती छवि जाल है। चरण कमल कडे कनक कलित छवि जावक निहारि प्रेम करत निहाल है॥१॥

❀ दोहा ❀

देखि युगल छबि नवल सब, प्रेम उमंगि अलिनयन ।
होरी रंग उछाह भरि, देन लगी सब सयन ॥

इति श्रीहरिशरनदासानु दास विदेहजाशरन कृत कुञ्ज
रूपक युगल सिगार वर्णनों नाम प्रथमो विनोद ॥१॥

❀ चौपाई ❀

पूरब दिसि सिय प्यारी राजैं । पच्छिम नवल लाल छबि छाजैं
आधो सखी सखा वनि सोहैं । दम्पति रंग रगी मन मांहैं
सियदिशिसखीसखापियओरी । नवल सिंगार किये सब गोरी
दुहुँ दिशि छत्र चँवर की सोभा । कहत न बनै देखि मन लोभा
अबरख रंग गुलाब की रासी । देखिदेखि मोहि लागत हांसी
चंदन चूर के रासि कपूरा । केसरि चूर फुलन के धूरा
केसरि रंगन कुण्ड भराई । अतरन की बहु नालि बनाई
गेंदा कमल गुलाव चमेली । दुहुँ दिसि रासिकियेअलबेली

❀ दोहा ❀

होरी सौज अपार है, वरनि कहै मति कौनि ।
पिय प्यारी की छवि निरखि, थकित रही गति मौनि ।१॥

धूप दीप नैवेद करि, अतर पान दै माल ।
दुहुँ दिसि आरति साजि कै, करन लगी नव बाल ॥२॥
बीन मुर्चंग सितार धुनि, झाँझ मृदंग बजाय ।
नृत गान करि प्रेम सो, युगल सु छबि उरलाय ॥३॥
दुहुँ दिसि उमंग बढ़ाय कै गावत हैं अलि फाग ।
दम्पति के मन मोद अति, मदन मनोरथ जाग ॥४॥

❀ पद ❀

खेलि रहे दोउ फागरी सजि रंग रंगीले ॥
सनमुख चितै भरे अनुरागैं, नैन सैन चमकीले ॥१॥
सखी सखा दुहुँ ओर हजारन, फूल गुलाब छबीले ॥२॥
प्रेमलता रस उमग बढ़ावति, गान करैं चटकीले ॥३॥

❀ दोहा ❀

एक सखी सिय बोलि कै, पठयो प्रीतम पासु ।
हाल कह्यौ समुझाय कै, सजग होउ पिय आसु ॥१॥
सिय पद कमल प्रनाम करि, सान भरीसो बाल ।
प्रीतम छवी निहारि कै, गान कियो दै ताल ॥२॥

❀ पद ❀

नवल सैंया सुनि लीजै हमारी ।
प्यारी की हम नवल दूतिका सजग होउ धनु धारी ॥१॥

नीति विचार करौ रघुनन्दन मति दीजे हमै गारी ॥२॥
प्रेममोद रँग भरि पिचकारी डारि दई खेलवारी ॥ ३ ॥

❀ पद ❀

फुल गेंदा न मारो नवल रसिया ॥
अंग लगत मन मदन मनोरथ जोबन जोर कसी अंगिया ॥१
सनमुख खड़ी भरी तन लाजन चहुँदिशि देखि हंसै सखियाँ॥२
फागुन में रस लेहु रसीले रहौ सदा पिय तिय बसिया ॥३॥
प्रेमलता तन सुधि कछु नाहीं पिय मुख निरखि जकी अंखिया॥४

❀ पद ❀

पिचकारी न मारो नई अँगिया ॥
फागुन फाग खेलि सिय संग में, सदा रहौ पियरस पगिया ।१
नव जोबन रस छकौ रसीले, मदन मनोरथ हिये जगिया ॥२॥
तुम हो नये नई नव नागरि, कुञ्ज रसाल नई बगिया ॥३॥
प्रेमलता मन मंजु मनोरथ, युगल फाग लखि दृग रंगिया ॥४

❀ दोहा ❀

अलि बोली अनखायकै, सुनों छैल रघुबीर ।
हाहा तुमहि खवाइहौं, धरो हिये बिच धीर ॥१॥

हौं नवला सुकुमारि पिय, अनय कियो बरजोरि ।
नवउरोज रंग मारि कै, आप हमौं मुख मोरि ॥२॥
लाल कह्यो मुसुकाय कै, अनय नहीं यह नीति ।
फागुन में मरजाद कहुँ, तुमहुँ करो रस रीति ॥३॥
अली चली परचारि कै, सजग होउ रघुलाल ।
लाल बोलि कहि सखन सों, चलो सैन सजि हाल ॥४॥
रँग भींजी अलि आयकै स्वामिनि पद सिरनाय ।
हाल कह्यो रघुलाल कै, अपने अङ्ग देखाय ॥५॥

❀ पद ❀

फुलन की छड़िया मारी दैया ॥
अवध छैल रसिया रघुनन्दन, बांह गहेउ बरियैया ॥१॥
घूंघट खोलि गुलाल लगायो, अंगन रस बरिसैया ॥२॥
लाजन भरी कहेउ नहि माने, मंद मधुर मुसकैया ॥३॥
प्रेमलता श्रीजनक नंदिनो, जानेउ खेल खेलैया ॥४॥

❀ चौपाई ❀

तव सिय चन्द्रकला तन हेरी । जूथेस्वरि सनमुख भइनेरी
स्वामिनि कहेउजायपियजीतो । सैन साजिरँग मारि भलीतो
यह सुनि अग्र अली करजोरी । स्वामिनि आसपुरावो मोरी

मन अभिलाख वहुत है भारी। अज्ञा पाउं करौं तैयारी
स्वामिनी चन्द्रकला मुसकाई। कहेउ जाहु अलि सयनसजाई
येहि विधिवात करत इतआली। उतते सखा पठायोख्याली
मदन मनी निज नामसुनायो।सियस्वामिनिपदसीसनवायो

❀ दोहा ❀

हाल कहेउ सब लाल कै, चलो सयन सजि हाल।
अग्र अली सिरनाय कै, संग लिए वहु वाल ॥१॥
दिव्य नवल रथ साजि कै, चली अली समुदाय ।
होरी चाह वढाय कै, बाजन नवल वजाय ॥२॥
मदन मनी कौ पकरि कै, सखी सरूप बनाय ।
मन भायो रंग बोरि कै, प्रीतम पास पठाय ॥३॥

इति श्री हरिशरनदासनुदास विदेहजा शरन कृत होरी सोज
युगल संबाद वर्णनो नाम दुतियो विनोदः ॥२॥

❀ मनोरम छन्द ❀

उत पहुंचे रूप बनाये। पिय निरखि चीन्हि नहिपाये ॥
तब मदन मनी हंसि बोले। हम सखा रावरे होले ॥
यह हाल हमारि कराई । अब पठवहु सयन सजाई ॥
तब प्रीतम लीन्ह बोलाई। एक सखा सुजान सोहाई॥

हैरसिक मनी तेहि नामा । जेहि लखि लाजहिं वहु कामा ॥
रथ साजि चल्यो हरखाई । सजि सयन समूह सोहाई ॥
इत अली चली रस माती । नव भूषन धुनि सरसाती ॥
दुहुँ ओर खड़े चित चाये । बहु सखी सखा उमताये ॥
जै सब्द करैं दुहुँ ओरी । जै नवल किशोर किशोरी ॥
सब सुमनन चोट चलावैं । वहु रंग गुलाल उड़ावैं ॥
नभ रँग गुलालन छाई । सब लालै लाल देखाई ।
बहु सखी सखा गहि लीन्ही । नव अंगन रंग भरि दीन्ही ॥
एक सखा सखी गहि लीन्ही । लै कुंडन डारि सो दीन्ही ॥
रंग भीजि गई वहु आली । सब सखा बजावैं ताली ॥
वहु गानतान सर माहीं । वहु नृत करैं हरखाहीं ॥
अलि कुमकुम चोट चलावैं । उत फौजें मारि भगावैं ॥
उत पिचकन रंग चलावैं । सब अलियन मारि भगावैं ॥
बहु ताल मृदंग बजावैं । बहु रंग सुमन बरसावैं ॥
बहु होड़ाहोरी बोलैं । वहु वसन हीन तन डोलैं ॥
वहु स्वाँग अनेकन लावैं । वहुहास बिलास बढ़ावैं ॥
कोऊ संकर रूप बनाई । चढि वसहा डमरु बजाई ॥
वहु गन के रूप बनाई । संग बं बं बोलैं धाई ॥
वहु अट पट वानी बोलैं । खर स्वान चढ़े वहु डोलैं ।

सब नाचैं परम तरंगी । बहु साज बजावैं भृंगी ॥
सिव देखि हँसे ठट्ठाई । गन गान तान मन भाई ॥
कोउ काली बनि कै आई । सँग जोगिनि बहु लै आई ॥
सब अटपट साज बनाई । जेहि देखत लगै हंसाई ॥
बहु तान तरंग बढाई । सब नाचैं ताल बजाई ॥
बहु उलटी ह्वै कै नाचैं । बहु वेख अनेकन साचैं ॥
सिव सनमुख काली आई । दोउ रंग की रारि मचाई ॥
इत काली जोगनि खेलैं । उत संकर गन रंग मेलैं ॥
बहु जोगिन गनसे लपटैं । दोउ काली संकर झपटैं ॥
रँग धूम मचाई भारी । सब गावहिं अटपट गारी ॥
येहि बिधि बहु स्वांग देखाई । सब लुप्त भये को गाई ॥
इत अग्रअली रस रूपा । उत रसिक मनी वल भूपा ॥
दोउ सनमुख सयन चलाई । बहु केसर रँग मंगाई ॥
दोउ खेलैं करख बढाई । सब देह दसा विसराई ॥
बहु अबरख रंग उड़ाई । बहु अतरन कीच मचाई ॥
बहु देव सुमन बरसाई । सब नयनन को फलपाई ॥

❀ दोहा ❀

रसिक मनी को पकरि कै, घेर खड़ी बहु बाल ।
अपर सखा भागे सकल, जाय कहेउ सब हाल ॥ १ ॥

❀ चौपाई ❀

लाल सखन को धीरज दीन्हा । आपौ संग चले रंग लीन्हा
रसिक मनी को जाय छोड़ायो । सखियन को रंग मारि भगायो
अली भागि आई रथ पासा । लालन के मन परम हुलासा
लाल कहेउ निजस्वामिनि लावो । तब हमसे रँग विजय मनावो
अग्र अली बोली मुसकाई । बोलत में पिय लाज न आई
हमको प्रथम जीति जब जावो । तब प्रीतम फिर बीर कहावो

❀ दोहा ❀

येहि विधि के बहु वाद करि, मनमें रूरख बढाय ।
भिरेउ युगल दिशि परसपर, केसरि रंग उड़ाय । १॥

❀ मनोरम छन्द ❀

बहु केसर रंग उड़ावैं । बहु डंक निसान बजावैं॥
दुहुं ओर विचार न लागे। बहु काम मनोरथ जागे॥
बहु आशव दिव्य मगाये। दुहुं ओरनि पान कराये॥
बहु अटपट बोलन लागे। सब लाज सिवा नहिं त्यागे॥
बहु कलसन रँग भरिलावैं। बहु पिचकन मारि दहावैं॥
सब मनसिज देव मनावैं। बहु केलि उमंग बढावैं॥

✽ दोहा ✽

येहि विधि खेल बढ़ाय कै, मन अभिलाखा जान।
रस हेतू वहु रूप को, धरि लीन्हेउ भगवान ॥१॥

❀ चौपाई ❀

प्रति प्रतिसखिनिस्यामकेरूपा। रस पीवहिअलि अङ्ग अनूपा
चहुँ दिसि वने मनिन वहु कुजैं। सुखमय सेज विछाई पुंजैं॥
तहँ रस रंगन होरी खेलहिं। निज अङ्गन से अङ्ग मेलहिं
प्रीतम अङ्ग नवल पिचकारी। अलियन के अंग डारि संवारी
कोउ पियगालगुलाललगावैं। प्रीतम भुज भरि अंक लगावैं
कोउ अधरामृत पान करावैं। कोउ अलि कंचुकिबंद खोलावैं

❀ दोहा ❀

यहि विधि की वहु केलि करि, एक रूप भये स्याम।
मरम न कोऊ जान कछु, सबके पूरे काम ॥ २ ॥

❀ चौपाई ❀

दुहुँदिसिते पुनि सयन सँभारैं। वहु सखि सखा रंगसजिमारैं
श्रीअग्रअली रथवेगि चलायो। उतते लाल साजि रथआयो

दुहुँ दिसि परी रंग की मारैं। बहि बहि चली रंग की धारैं
विमलानाम सखी गुन अगरी। पिय कोपकरि भिजायो पगरी
कहेउलाल अब जान न पावो। सिय स्वामिनिकीजोत मनावो
अपर सखी चहुँदिसि ते घेरी। विजय निसान बजावैं भेरी
पिय को सखा छोड़ावन धाये। बहुसखि रंगन मारि भगाये
कोउ सखीकहहिलाल सुनिलीजे। मनभावै तो फगुवा दीजै
कोउ कहैं छयल को नारि बनाऊँ। ताल मृदंगबजाय नचाऊँ
कोउ मुख चूमि गले लपटाई। श्याम कपोल गुलाल लगाई
कोउ सखि पकरि पितांबर खोलैं। रंग लगावैं अंग अमोलैं
विविधिभांतिके आनंदकरहीं। अकथअपारसुहिय सुखभरहीं
अग्रअली एक सखी बोलाई। रूपलता आई सिरनाई॥
कहेउ जाहु सिय स्वामिनि पासू। हाल सुनायो आयो आसू
रूपलता सिरनाय सिधाई। शीघ्र आय सिय पद सिरनाई

❀ दोहा ❀

हाल कहेउ रघुलाल कै, सुनि कै लली सुजान।
बहुत भाँति सनमानि कै, निजकर दीन्ही पान॥३॥

❀ चौपाई ❀

चन्द्रकला सन बोली प्यारी। अलि सुनु लाल बड़े छलकारी
बेगि जाय लावो धनुधारी। छूटि गये होइहैं श्रमभारी॥

सुनिसियबचनगवनअलि कीन्ही।रूपलतासँगअलिगनलीन्ही
सिवका चढ़ि पहुँची तहं जाई। निज समाज जहं रही सोहाई
चंद्रकला सब मे परधानी। जथा भांति मिलि सब सनमानी
चन्द्रकला श्रीअग्र सहेली। प्रीतम पास गई हँसि बोली
सुनहु लाल जी परम सुजाना। मरम आपको प्यारी जाना
जो कछु भई जान सो दीजे। जो हम कहहिं लाल सोई कीजे
चलो लड़ैती सनमुख प्यारे। मान किये श्रम होइहैं भारे
मान सब्द सुनि बोले प्यारे। जो कछु कहो करैं हम हारे

❀ दोहा ❀

येहि विधि से वहु बात करि, नवल लाल संग लीन्ह।
चली घेरि चहुँ ओर से, विजय दुन्दुभी दीन्ह॥ ४॥

❀ चौपाई ❀

सखा वेष से सखी रही जो। पुरुष वेष तजि आय मिली जो
सब मिलि संग चली हरखाई। वहु गावैं वहु साज वजाई
विविधि भाँतिमग कौतुक करहीं। हांस विलासन आनंदभरहीं
देव वधुन संग कौतुक देखैं। सुमन वरषि निज भाग सुलेखैं
ये देवी देवा सब आली। महल वसहिं नित कौतुक साली
लीला में वहु रूप वनावैं। लली लाल के मन अति भावैं

बहु सखिमिलकर कीन्ह विचारा। नवललालकोकरो सिंगारा
नारि नवीन बनाऊ पी को। दूलह नवल वेख करि सी को
दुहुँ दिशिते लै सनमुखकीजे। फाग खेलाय नवल सुखलीजे
चन्द्रकला श्रीचारुशीला जू। सकल कहहिं यह कीन्हभलाजू
चन्द्रकला सिय दिसिपरधानी। चारुसिला पिय ओर महानी

❁ दोहा ❁

करि बिचार येहि भांति से, नवल लाल ढिग जाय।
सजन लगी तिय वेख सब, लाल कहेउ मुसकाय॥

❁ चौपाई ❁

फागुन में रस रीति सोहाई। हार जीति की कौन बड़ाई
हारि हमारि सदा तुम जीती। सुनहु करहु यह रस की नीति
नारि हमहि करि पुरुष मिलावो। वेगिलड़ती पास सिधावो
पुरुष वेष करि वेगिं हिल्यावो। होरी में रँग धूम मचावो
हमहिं जीति तब बिजयमनावो। इतनीमन अभिलाख पुरावो

❁ दोहा ❁

बचन सुनत अलि स्याम के, नवल केलि हिय भास।
चन्द्रकला अलिगन सहित, चली आय सिय पास॥१॥
चरण कमल सिर नाय के, सिय स्वामिनि रुखपाय।
कहन लगी पिय हाल को, मृदु बचनन्हि समुझाय॥२॥

❀ चौपाई ❀

कृपा आपकी जीत कराई । पिय को लाई नारि बनाई
रसिक लाल आवत बनि नारी । आप चले पिय रूप संभारी
चलहु लाल सँग खेलैं होरी । जीति लेहि रस रँगन बोरी
प्रीतमसन अभिलाखा भारी । पूरन कीजिये अब चलिप्यारी
येहि विधि मन में चाह बढाई । सियप्यारी को चली लेवाई
चन्द्रकला विमला द सहेली । रंग रंगीली सब अलबेली
गावैं फाग साज सब बाजैं । जनक लली के चहुँदिशिराजैं
नख सिख लौं नव सात संवारे । छत्र चवर ब्यजनादिकधारे
यहि बिधि सकल समाज बनाई । इतसे चली महाछबि छाई
उत से आय रहे रघुलाला । चहुँ दिशिते घेरे अलिमाला
चारुसिला सुभगादिकआली । नवल सिंगार कियेछविसाली
छत्र चँवर आदिक लिये राजैं । गावत चली साज सबबाजैं
उतसे प्रीतम इतसे प्यारी । भोरिन रंग भरे पिचकारी ।
दुहुँदिशितेमुख चन्दनिहारी । अति अनुराग भरे पियप्यारी

❀ दोहा ❀

दुहुं दिशि की छबि देखि कै, वहुरति काम लजान ।
नयनन सैन चलाय कै, करन लगी अलिग्गान ॥२१॥

इति श्रीहरिशरनदासानु दास विदेहजाशरन कृत युगल परिकरको होरी खेलनो राजकिशोर की हारि श्रीराज किशोरी की जीत ॥ वर्णनोनां तृतीया विनोद ॥३॥

❀ पद ❀

नवल दोउ खेलैं फाग सोहाई ॥
जनकलली रघुलाल सलोने, दुहुँ दिशि अलि समुदाई ।
कुम कुम फूल परसपर मारै. अबिर गुलाल उड़ाई ॥
अतर गुलाब केसर रंग भरिकै, पिचकन अंग भिजाई ।
दुहुँ दिशि करष बढ्यो अति भारी, रंग कि जंग मचाई ॥
झीने बसन भीजि तन लपटे. नवल अङ्ग छवि छाई ।
बीन मृदंग झांझ डफ बाजहिं, गावहिं चाह बढाई ॥
रमा उमा ब्रह्मानी आदिक, चढ़ि बिमान सब आई ।
सोभा देखि सुमन बरसावहिं, अपने भाग मनाई ॥
प्रेमलता सिय जीत मनावति, हारि जाहिं रघुराई ॥

❀ पद ❀

खेलत लाड़िली लाल आजु रंग होरी ।
प्रीतम स्याम सुजान लाड़िली गोरी । संग अलिन के यूथ हरित रंग बोरी ॥ सनमुख दंपति खड़े चन्द मुख हेरैं । मनहु निमेवारि चकोर चकोरी ॥ बाजहिं डफ बीन मुचंग तमूरा वंसी । बहु झाँझ मृदंग सितार मुरलिका जोरी ॥ गान करहिं कल कंठ सुरस मयबानी । जेहि कोकिल सुनत लजाहिं मुनिन्ह चित चोरी ॥ अवधलाल की ओर कनक पिचकारी । इत जनक

लली की ओर नवल रंग भोरी ॥ अलि प्रेमलता छवि देखि वारि तृन तोरी । कहि जै जै युगल समाज किसोर किसोरी ॥

❀ पद ❀

खेलि रहे दोउ फाग नवल रस माते ॥
अरस परस चित चोरि किसोर किसोरी ।
निज नयनन सयन चलाय मधुर मुसकाते ॥
नेह उमंग बढ़ाय रहे दोउ प्यारे,
लखि मदन मनोरथ जाग नयन रसराते ॥
दुहुँ दिसि सखी अपार खड़ी रसमाती,
बहु गान तान सरसाहि बरनि नहि जाते ॥
धाय चलै रँग मारि झमकि हटि जाहीं,
अंगन रस बरसाय गुलाल लगाते ॥
विष्णु शंभु ब्रह्मादि देव सह नारी,
सुमन माल वरसाय निसान बजाते ॥
प्रेमलता छवि देखि मगन सब आली,
नृतत करि गुन गान सुरँग बढाते ॥

❀ दोहा ❀

पिय तिय वेष संवारि कै, पिचका वगल दवाय ।
घूंघुट वदन छिपाय कै, छल करि सिय ढिग आय १॥

रँग पिचकारी मारि कै, हो हो होरी गाय।
चन्द्रकला दिशि देखि कै, भागि चले मुसकाय ॥२॥

❀ पद ❀

लाल अब जाने न पैहो छल करि अग भिजाई ॥
सिय प्यारी पर रंग चलायौ, अवहीं देउं देखाई।
अस कहि चन्द्रकला अलि, दौरी संग अली समुदाई ॥
कहहिं छैल अव सजग हूजिये, संग सहाय बोलाई।
हाहा खवाय पकरि मुख मसलों. छल की बानि छोड़ाई ॥
स्याम भागि निज गोल समाये, बहु सखी लीन छिपाई।
इत से जाय घेरि सब लीन्ही, पिचकन रँग बरसाई ॥
रंगन मारि बिहाल किये सब, पिय को गोल भगाई।
चन्द्रकला गहि रसिकलाल को सिय की जीत मनाई ॥
गाल गुलाल मसलि मुख चूमहिं, रस मय अंग लपटाई।
बिजय निसान बजावहिं हरखहिं. प्रेमलता मन भाई ॥

❀ दोहा ❀

रंगन अंग भिजाय कै, कर से ताल बजाय।
मन भावै सो करहि सब, हो हो होरी गाय १॥

❀ चौपाई ❀

चारुशिला पिय गोल संभारी। उतसे आय मारि पिचकारी
देखि लाल को घेरे नारी । तुरत छोगाय लीन्हि रंग मारी
अरसपरसपर दोउ दिसि भिरहीं। हटहिनकोटिभांतिवलकरहीं
पिचकन मारि गुलालनभरहीं । भूषनवसन खुलहिंमहिपरहीं
केस खुले मुख ऊपर सोहैं। नूपुर धुनि जड चेतन मोहैं।
उड़ी अवीर पवन वल पाई। देव लोक में पहुँची जाई
रंगन की बहु धार बहाई।नालिन ह्वै सरयू में आई
दशहुँ दिसा रंगन से छाई। सरित सरोवर भरि उमड़ाई
येहि विधि की रंग धूममचाई। पुनि पकराय गये रघुराई

❀ दोहा ❀

चन्द्रकला रघुलाल को, गहि तिय बेष संवारि ।
अलिगन सकल निहारि कै, तुरतहि खेल उसारि ॥१॥

❀ चौपाई ❀

चहुँदिसि घेरि चली सब बाला। सकल कहहीं सुनियेरघुलाला
चलि प्यारी पद सीस नवावो। चूक भई सो माफ करावो
हारि मानि कर जोरहु प्यारे। कहेउ लाडिली दास तुम्हारे

❀ दोहा ❀

पियलीला को सुमिर मन, कौतुक कीन्ह अनूप।
यक सखिको समुझाय कै, करि दीन्हेउ निजरूप ॥
निज दरजे पर ताहि करि, कहैं करेउ अलि सोय।
मौजैं तुम्है देखाइहौं, मरम न पावै कोय ॥

❀ चौपाई ❀

आप तुरत निकसेउ खेलवारी। नवल तियाको वेख संवारी
चले झमकि सँगलै अलि चारी। पूजन को वहु साज संवारी
गान करत आयो जह प्यारी। पूजन कीन्ह बिधान संवारी
सिय पूछेउ कहु को तुम्हवाला। पदसिरनाय कहनलगिहाला
कहौं सुनहु स्वामिनि सुखकारी। रितु वसंतकी हम प्रियनारी
तव प्रीतमतिय वेख वनायो। रूप देखि मम पती लोभायो
तजि दीन्हेउ हम को दुख भारी। रक्षाकोजिय बिरद विचारी
राखहु शरण दाशिलघु जानी। अस कहि परीचरण लपटानी
सुनिप्यारी वचनन की रचना। दंगभई मुख आव न बचना
प्यारी की प्रिये मुख्य सहेली। चम्पक लता नाम सुखदेली
नयन सयनदै मरम जनायो। नाह जानि सिय हृदय लगायो
अति अनुराग मिले सुख साजे। दम्पति एक सिंहासन राजे
मिलि दोउ प्यारे संग बिराजैं। वहुरति कामनिरखिछबिलाजैं

यहि बिधि इत की लीला गाई। उतकी सुनहु कहों समुझाई
प्रीतम रूप वनी जो वाला। ताहि घेरि ल्यावैं अलिमाला
येहि बिधि नाचत गावत आई। बिजय दुंदुभी दीन्हिबजाई
सिय देखेउ उत से सब आवैं। अलि एक घेरि नचावहिंगावैं
सिय बोली कमले तुम्ह जावहु। हाल सुनाय सबहिं लैआवहु
कमला लीलहि जाय छुड़ाई। सकल सभाज संग लै आई
आयसबन्हिसियपद सिरनायो। वैठे लखि पियअचरजआयो
चन्द्रकला सवहो समुझाई। कौतुक निधि कृपाल प्रभुताई
कृपा कोरसियसबहिं निहारी। मिली आय सब भई सुखारी
अति अनुराग ऊमंगिसबहेली। युगलसिंगारकरहि अलवेली

❀ दोहा ❀

रँग भीजे बिपरीति सब, भूषन वसन उतारि।
नख सिखलौंसिंगार नौ, अलिगन कीन्हि संवारि॥
पीत रंग के वसन सब, हरित रंग की कोर।
स्याम लाल रंग बूटिया, ताकी छवि अति जोर॥
प्यारी के सिर चन्द्रिका, रघुबर के सिर पाग।
भूषन अंग अंग सोहहीं, निरखत मन अनुराग॥
धूप दीप नैवेद करि, जल पियाय अचवाय।
पान अतर दै माल बर, दीर्घा दरस देखाय॥

आरति करि सिरनाय सब, चहुँदिसि सोभित वाल।
गलबाहीं दै राजहीं जनकलली रघुलाल ॥
हंसि रस साने बचन वर, मृदु स्वर लली उचार।
कहहु लाल मन भावने, गयेउ गुमान तुम्हार ॥
हम तुम्हरे वस लाड़िली, सांची कहौं सुजान।
तव दासिन के दास हम, मेरे कौन गुमान ॥
प्रान नाथ के बचन सुनि, प्रिया मधुर मुसकाय।
गाल गुलाल लगाय के, लीन्ही हृदय लगाय ॥
सुनि दम्पति के बचन वर, अलिगन जीवन प्रान।
जुगल चन्द मुख हेर कै, बलिहारी करि गान ॥

❀ पद ❀

बलिहारी अली दोउ प्यारे की।
रंग रंगीले अति हीं छबीले बचन पीयूष उचारे की।
गाल गुलाल लगावत दोऊ अरस परस भुजधारे की ॥
गौर श्याम मन हरन सोहाये रति मनमथ छबि हारेकी।
प्रेमलता तृन तोरि बिलोकति जीवन प्रान हमारे की ॥

❀ पद ❀

निरखु सखी आजु बनी छबि भारी।
होरी खेलि सिंहासन राजैं राम रसिक सिय प्यारी।
अलीगन सुभग चहूं दिशि ठाढी सेवा सौज सवांरी ॥

चन्द्रकला श्री अग्र अली जू चारु सिला सुभगारी ।
दुहुँ दिशि चंवर लिये कर कमलनि नव सुन्दरि सुकुमारी ॥
बिमला चन्द्रवती लिये दोऊ छत्र सु झालरिदारी ।
युगल प्रिया श्री प्राण प्रिया जू नवल नेहलति कारी ॥
साजि मृदंग वीन मंजीरा चहुँ अलि सुभग सितारी ।
हेमलता श्री प्रीतिलता जू ब्यजन लिये मन हारी ॥
मधुरलता श्री युगल बिहारिनि अतरदान कर धारी ।
श्रीरस मोदलता रस दानी रूप गुनन उजियारी ॥
चंपकलता सकल गुन खानी जीवन प्राण हमारी ।
रूपलता श्री प्रेम मंजरी कर कमलन लिये झारी ॥
प्रेम प्रभा गावति रस माती निरतति प्रेमलतारी ।

❀ दोहा ❀

येही विधि दम्पति राजहीं, रस मैं नित्य नवीन ।
चतुर सिरोमनि धन्य तेई, जे येहि ध्यान सुलीन ॥१॥
बसंत कुञ्ज कुंजेस्वरी, कहेउ कमल कर जोर ।
व्यारू करि मम कुञ्ज में, सोइये जुगल किसोर ॥२॥
सह समाज चढ़ि नवल रथ, व्यारु कुंज में जाय ।
भोजन कीन्ह अनेक विधि, पान खाय सुख पाय ॥३॥

सयन कुंज में आय कै, सोये रस में लीन ।
बंसत कुंज की अलिन को, येहि बिधि रहि सुख दीन ।।४।।
रस होलिका सु विनोद जे, कहहिं सुनहिं मनलाय ।
लली लाल को फाग रस, तिन्हके हिय दरसाय ।।५।।
संमत वसु मुनि अंक ससि, फागुन नवल सु मास ।
वदि दशमो थिति वार सुभ, मंगल मंगल रास ।।६।।

इति श्रीहरिशरनदासनुदास विदेहजाशरन कृत श्रीराजकिशोरी जू श्रीराजकिशोर जू फाग खेलनो श्रीराजकिशोरी जू की विजय श्रीराजकिशोर जू की हारि वर्णनो नाम चतुर्थ विनोदः समाप्तः ।। शुभम् ।।



❋ श्रीमहाराज जू कृत ग्रन्थों की सूची ❋



१ द्वादस रास प्रमोद

२ श्रीयुगल विभूति प्रकाशिका

३ रसतत्व सिद्धान्त प्रकाशिका

४ श्रीअशोक बाटिका विलाश

५ श्रीप्रेमलता पदावली अष्टयाम

६ पंच प्रकाश रामायण

७ द्वादस मास उत्सव विलाश पदावली

८ झूलन प्रेम पदावली

९ मंत्रार्थ प्रकाशिका

१० होलिका रस विनोद

प्राप्तिस्थान—

श्रीविदेहजा दूल्लहनिकुञ्ज

ऋणमोचनघाट, श्रीअयोध्याजी

मुद्रक—एस० पी० एस० श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।